कृषिलोक ई-पत्रिका

Agriculture

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

बच्चे का संपूर्ण विकास

1. **रूपिका चौपड़ा**
सहायक प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, कन्या महाविद्यालय, जालंधर, पंजाब
ई-मेल: rupikachopra90@gmail.com

2. **पूनम यादव**
जिला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, (सी.सी.एस.एच.ए.यू., हिसार के तहत) महेंद्रगढ़ हरियाणा
ई-मेल: poonnamyadav@gmail.com

Received: September, 2023; Accepted: September, 2023; Published: October, 2023

बच्चों के मस्तिष्क का 85% विकास 6 वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है। इस उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए ही उसके प्रारंभिक 6 वर्षों को महत्वपूर्ण माना जाता है। इस महत्वता को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में 3 वर्ष के बच्चों को 5+3+3+4 के ढाँचे में शामिल किया गया है। पूर्व/ प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का उद्देश्य बच्चे की सामाजिक भावनात्मक और शारीरिक आवश्यकताओं का संपूर्ण विकास करना होता है यह विशेषत: 3 से 5 वर्ष के बच्चों के लिए होती है।

पूर्व पाठशाला की विशेषताएं

- पूर्व पाठशाला में पढ़ना, लिखना और गिनना इत्यादि सिखाने के लिए कोई पाठ्य चर्चा से बंधा हुआ कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह पढ़ने लिखने और गिनने इत्यादि की योग्यता के विकास के लिए नींव डालता है।
- पूर्व पाठशाला में खेल-खेल में सिखाने की गतिविधियां आयोजित की जाती है।
- पूर्व पाठशाला बच्चे के संपूर्ण विकास पर केंद्रित है जो कि बच्चे के सामाजिक, शारीरिक एवं भावनात्मक विकास के लिए खेल द्वारा एक प्रेरक माहौल बनाती है।
- पूर्व पाठशाला माहौल के साथ पारस्परिकता, सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी तथा बच्चों में समस्या समाधान की योग्यता को बढ़ावा देती है।
- पूर्व पाठशाला में बच्चों के चुपचाप सुनते रहने और रटवा कर सिखाने पर बल नहीं दिया जाता।
- हर बच्चा विशिष्ट होता है।
- बच्चे के विकास का एक निर्धारित कर्म होता है।

- बच्चे के विकास पर उसके वंशानुक्रम, वातावरण एवं पालन पोषण का प्रभाव पड़ता है।
- बच्चा बार-बार अभ्यास करके सीखता है।
- बच्चा आर में केंद्रित होता है तथा वह हर वस्तु को अपने ही दृष्टिकोण से देखता है।
- बच्चा अधिकतर अनुकरण द्वारा सीखता है।
- बच्चा अत्यंत क्रियाशील होता है तथा वह प्रशंसा व प्रोत्साहन चाहता है।
- उनमें अप्रत्यक्ष चिंतन शक्ति विकसित नहीं होती, अत: वह प्रत्यक्ष वस्तुओं और अनुभवों से ही सीखते हैं।

पूर्व पाठशाला में बच्चे निम्नलिखित गतिविधियां करना पसंद करते हैं:

- कहानियां सुनना
- खेल खेलना
- गीत गाना
- नाचना
- छोटे समूह में गतिविधियां करना
- अपने आसपास की चीजों की खोजबीन करना
- गुड़ियों, पानी और मिट्टी से खेलना
- अच्छे-अच्छे कपड़े पहनना व अभिनय करना आदि।

पूर्व पाठशाला की आवश्यकता तथा महत्व:

- बच्चों को अपनी पूरी क्षमता के विकास के अवसर देना।
- सीखने तथा शिक्षा की नींव डालना।
- प्रेरक माहौल देना।
- अपने साथी समूहों तथा बड़ों के साथ पारस्परिक व्यवहार के अवसर प्रदान करना।
- प्रारंभिक शिक्षा को व्यापक बनाने के लिए बढ़ावा देना।
- बच्चे के मन में शुरू से ही नैतिक मूल्यों की भावना जागृत करना।
- बच्चों को स्कूली शिक्षा तथा पढ़ने लिखने की कुशलताओ के लिए तैयार करना।
- बच्चों में शुरू से ही अच्छी आदतें डालना।
- टीमवर्क पर केंद्रित गतिविधियां करवाकर बच्चों के व्यवहार को बेहतर बनाना।
- विविधता के लिए एक्सपोजर उपलब्ध करवाना।
- माताओं को अपने लड़कियों को स्कूल में भेजने के लिए मदद करना और जब वे काम के लिए बाहर जाती हैं तो उनके बच्चों को सुरक्षित स्थान पर रखना।

पूर्व पाठशाला के उद्देश्य:

1. अच्छा शारीरिक गठन, मांसपेशियों का तालमेल, बुनियादी गतिशीलता संबंधी कुशलताएं।
2. अच्छी आदतें और कुशलताएं विकसित करना।
3. शौचालय संबंधी प्रशिक्षण, कपड़े पहनना, खाने और सफाई की आदतें विकसित करना।
4. सामाजिक व्यवहार का विकास
5. समूह में रहने का तरीका, भागीदारी और सहयोग।
    - एक दूसरे से चीज लेना देना।
    - अपना और दूसरों का ध्यान रखना।
    - सामान्य क्रोध तथा आक्रामक स्थान पर नियंत्रण रखना।
    - शर्मीले स्वभाव को खत्म करना।

6. भाषा संबंधी विकास

- अपने सहपाठियों, शिक्षकों तथा माता-पिता से बातचीत करना सीखना।
- विचारों तथा भावनाओं को आसानी से सही और स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करना।

7. भावात्मक परिपक्वता मार्गदर्शन द्वारा अभिव्यक्त करना, समझना, स्वीकार करना तथा भावनाओं पर नियंत्रण करना।

8. बौद्धिक जिज्ञासा को प्रेरित करना ताकि बच्चे जानकारी प्राप्त करके, खोजबीन, प्रयोग तथा सीखकर अपने वातावरण को समझ सके। क्योंकि इस उम्र में बच्चे उन रुचियों को खोजना शुरू कर देते हैं जो वे जीवनभर के लिए रखते हैं।

9. नैतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को जागृत करना ताकि बच्चे इमानदार, आज्ञाकारी, सत्यवादी बने एवं बड़ों का आदर करना सीखें।

10. सौंदर्यनुभूति का विकास स्वयं अपने लिए, दूसरों के लिए तथा वातावरण संबंधी वस्तुओं के लिए विकसित होना।

11. आत्मविश्वास एवं अनंत अनुशासन को विकसित करना मनोसामाजिक विकास तथा रचनात्मक एवं ज्ञान विज्ञान की जानकारी से प्रेरित करना।

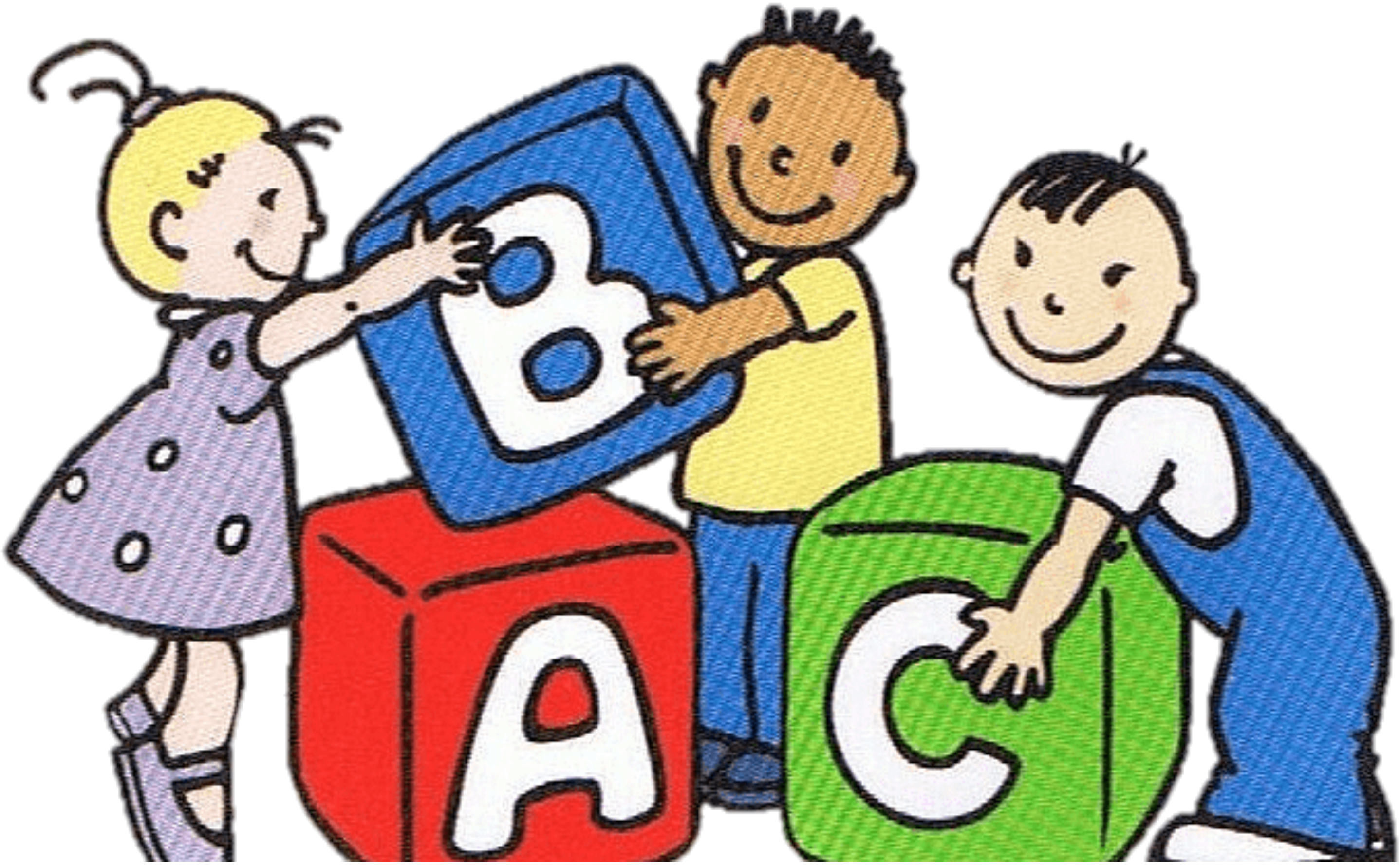आजीवन सीखने का उत्साह यदि बच्चों को मजेदार और रोमांचक गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाया जाए तो उनमें सीखने की इच्छा विकसित होगी जो कि उनके पूरे जीवन को उत्साह से भर देगी इसलिए प्रारंभिक पाठशाला शिक्षा बच्चे के संपूर्ण विकास के लिए जरूरी है। संक्षेप में, पूर्व पाठशाला कार्यक्रम जीवनपर्यंत सीखने के लिए उत्तम नींव पर्दान करता है। इसलिए यदि बच्चा बाद के वर्षों में अच्छे परिणाम प्रदर्शित करता है, तो शुरु में पूर्व पाठशाला कार्यक्रम पर किया गया यह खर्च बहुत ही महत्वपूर्ण निवेश है।